आतंकवाद : एक मानसिक अवसाद

डॉ० श्वेता जैन

अंशकालिक प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग
जैन स्थानकवासी गर्ल्स डिग्री कालिज, बडौत, जनपद बागपत।

सारांश

वर्तमान में हमारेप्राणी की कुछ विशिष्ट मनोदशायें ऐसी हैं जिनमें व्यक्ति हिंसा करता है।

आक्रोश– जब किसी व्यक्ति के मार्ग में रूकावट आती है या जान बूझकर अवरोध उत्पन्न कर दिया जाता है तो उस प्राणी का आक्रोश स्वतः ही फूट पडता है।

स्वेच्छारिता– जब कोई व्यक्ति स्वयं को सर्व साधन सम्पन्न समझकर निरंकुशता का मार्ग पकडकर दूसरों को हानि पहुंचाए तो भी आतंक का जन्म होता है।

असहिष्णुता– असहिष्णु व्यक्ति संकीर्ण व ओछी मानसिकता का शिकार होता है, वह अपनी जीवन शैली, अपने विचारों, परम्पराओं से इतना तादात्म्य बना लेता है कि उसे जो कुछ उनसे अलग मिलता है वह उसे घृणा व द्वेष की दृष्टि से देखता है। उसकी बुद्धि का हनन हो जाता है और वह हिंसा का प्रतीक मात्र बनकर रह जाता है।

अपमान का धरातल हो, नफरत की खाद हो और समर्थन रूपी पानी की बूंदे तो एक छोटे से उद्देश्य की जड पर आतंकवाद का छोटा सा पौधा देखते ही देखते विशाल वटवृक्ष बन जाता है। कुछ तो इस वृक्ष की ऐसी शाखा होती हैं जिन्हें उस जड़ रूपी उद्देश्य का सही ज्ञान भी नहीं होता और न ही आतंक के इस वृक्ष द्वारा फैलाई जाने वाली तबाही से उनका वास्तविक परिचय ही होता है वे तो मात्र कठपुतली की तरह कार्य करते हैं। मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य से कहा जाये तो आतंकवाद एक भय की स्थिति का जन्मदाता और सामूहिक अपराध है। यह एक अकेले व्यक्ति द्वारा कार्यरूप में परिणत नहीं होता बल्कि एक समूह विशेष द्वारा व्यवस्था, धर्म, वर्ग या समूह के विरूद्ध चलाया जाता है। यह एक मनोवैज्ञानिक युद्ध भी है क्योंकि इसमें विपरीत पक्ष को मानसिक रूप से आहत कर दिया जाता है। डराना, धमकाना, दुष्प्रचार, अफवाहें उनके हथकंडे होते हैं।

मूल शब्द

भूमिका, आंतकवाद के लिए उत्तरदायी विभिन्न मनोदशाएं, आतंकवाद के मनोवैज्ञानिक कारण, भारत में आतंकवाद, समाधान की राहें, निष्कर्ष, संदर्भ सूची।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ० श्वेता जैन

आतंकवाद : एक मानसिक अवसाद

शोध मंथन, मार्च 2018,
पेज सं0 86–91

Article No. 13
http://anubooks.com
?page_id=581

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि विग्रह एवं विप्लव के भयंकर भंवर में आज समन्वय एव ंसामंजस्य के सेतू की महती आवश्यकता है तथा धार्मिकता जो मानव सभ्यता का आधार रही है उसकी सही समझ सबसे बड़ी चुनौती है।

भूमिका

किसी विद्रोह क्रान्ति या आन्दोलन की शुरूआत के भिन्न–भिन्न कारण होते हैं। मानव हिंसा का सहारा तब लेता है जब उसका शोषण इस कदर हो गया होता है कि उसका रोम–रोम दहकने लगता है। सामाजिक न्याय और भ्रष्टाचार के खिलाफ उसके जागने का यह प्रथम संकेत भी होता है।

वैसे तो किसी भी प्रकार के आतंकवाद, क्रांति या आन्दोलन को किसी कारण विशेष से सम्बद्ध कर देना नादानी है। आतंकवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जो कई सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक कारणों के ऊहापोह की उपज है। यह जरूर हो सकता है कि इसका प्रतिशत अलग हो या विभिन्न स्थितियों में यह प्रतिशत कभी किसी एक कारण के पक्ष में ज्यादा हो तो दूसरी स्थिति या समय में दूसरे कारण के पक्ष में। यह भी जरूरी नहीं कि देश या क्षेत्र विशेष में आतंकवाद के जो कारण रहे हो वे दूसरी जगह भी होने से वहाँ आतंकवाद जन्म लें। अलग–अलग देशों या क्षेत्रों के लोगों की सहनशक्ति संवेदनाओं और जानकारियों में अंतर होना स्वाभाविक है।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कार्ल जुंग ने मनुष्य के व्यवहार का अध्ययन करते हुए इसे दो प्रकार का बताया अंतर्मुखी एवं बाह्यमुखी। अंतर्मुखी की दृष्टि खुद पर ही रहती है। वह स्वयं को भली प्रकार जानता है जबकि बहिर्मुखी का ध्यान बाह्य जगत में संलग्न रहता है। वह खुद से ज्यादा बाह्य तत्वों में रूचि रखता है। समाज में ज्यादातर बहिर्मुखी ही देखने को मिलते है लेकिन यदि बहिर्मुखता किसी व्यक्ति में ज्यादा हो जाए तो वह स्वयं से कट जाता है। अपनी संवेदनशीलता खो देता है। अपने सभी विपरीत अनुभवों का कारण दूसरों को ही मानता है स्थिति यहां तक हो जाती है कि हर वो चीज जो दूसरों के पास है उसे भी चाहिए और यदि वह उसे नही मिलती तो वह विद्रोह के तेवर अपनाने लगता है।1 इसके अतिरिक्त कुछ विशिष्ट मानसिक स्थितियों में भी व्यक्ति हिंसा करने लगता है।

सर्वप्रथम आक्रोश, क्रोध अथवा झुंझलाहट एक ऐसी मनोदशा है जिसमें कोई भी व्यक्ति हिंसा पर उतारू हो जाता है। जब किसी व्यक्ति के मार्ग में रूकावटें आती हैं या अवरोध जान बूझकर उत्पन्न कर दिए जाते है; तो उनमें आक्रोश पनप सकता है। कभी–कभी दिशाहीनता व मोहभंग की स्थिति में भी आक्रोश फूट पडता है।

आतंकवाद के मूल में क्रोध की अधिकता पाई जाती है। जब मन मुताबिक व्यवहार न मिले तो झुंझलाहट अथवा क्रोध का जन्म हर व्यक्ति में होता है परन्तु कुछ लोगों की झुंझलाहट समय के साथ समाप्त हो जाती है तो कुछ लोगों की झुंझलाहट निरंतर बढती रहती है। धीरे–धीरे वे मानसिक रोगी बन जाते हैं। उनमें क्रोध की अग्नि इतनी तीव्र हो जाती है कि उन्हें हर समस्या का समाधान हिंसा में ही दिखाई देता है। उनके इसी रोग का अवांछित तत्व फायदा उठाते हैं और उन्हें आतंक की दल–दल में खींच लेते हैं।

डॉ० श्वेता जैन

दूसरी मनोदशा है महत्वाकांक्षा, आज हर आदमी भौतिकवाद के पीछे भाग रहा है। सभी को धन कमाने की जल्दी है। येन केन प्रकारेण धन उपलब्ध होना चाहिए। यही अभिवृत्ति अपराध जगत की ओर व्यक्ति को अग्रसर करती है। व्यक्ति प्रारम्भ में शीघ्रता से धन कमाने हेतु अपहरण एवं गैर कानूनी धंधों का सहारा लेता है। धीरे–धीरे व्यक्ति आतंकवादी संगठनों के सम्पर्क में आ जाता है और आतंकी बन जाता है। महत्वाकांक्षा का नशा सर्वाधिक शक्तिशाली है। धन एवं शक्ति की महत्वाकांक्षा आम आदमी को आतंकी में बदल देती है।

तीसरी मनोदशा जो हिंसा को जन्म देती है वह है स्वेच्छाचारिता एवं निरंकुशता, जब कोई व्यक्ति स्वयं को पूर्ण साधन सम्पन्न समझ कर सुरक्षित मानकर दूसरों की सुरक्षा में बाधा खडी करें तो ये परिस्थिति भी आतंक को जन्म देती है।

चौथी मनोदशा है असहिष्णुता, जो हिंसा का कारण है। असहिष्णु व्यक्ति संकीर्णता व ओछी मानसिकता का शिकार होता है। वह अपनी जीवनशैली, अपने विचारों, अपनी परम्पराओं से इतना तदात्मय बना लेता है कि उसे जो कुछ उनसे अलग मिलता है वह उसे घृणा व द्वेष की दृष्टि से देखता है। उसकी संकीर्ण मनोवृत्ति दूसरों के लिए पीडा का कारण बन जाती है। ये मनोदशाएं व्यक्तिगत भी हो सकती है और समूहगत भी। ये व्यक्ति की बुद्धि और विवेक छीनकर उसे उन्माद में ले जाती है और हिंसा का प्रतीक बना देती है।

हिंसा और आतंकवाद का चोली दामन का साथ है जहां आतंकवाद है वहां हिंसा लाजमी है या यह कहा जाएं कि आतंकवाद की आधारशिला ही हिंसा है बस थोडा मंतव्य अलग है। व्यक्तिगत हिंसा का दायरा कुछ सीमा तक निश्चित होता है जबकि आतंकवाद का स्वर सबसे ऊपर है। इसका दायरा ज्यादा व्यापक है यह भौतिक आवश्यकताओं से आगे निकलकर वैचारिक आधिपत्य और संगठित आधिपत्य तक पहुंच जाता है।

आतंकवाद के मनोवैज्ञानिक कारण

अपमान का धरातल हो, नफरत की खाद हो और समर्थन रूपी पानी की बूंदे तो देखते ही देखते छोटे से उद्देश्य की जड पर आतंकवाद का छोटा सा पौधा वट वृक्ष बन जाता है। खून के एक–एक कतरें में इतना आक्रोश भर जाता है कि दिल में उसे समाहित रखने की ताकत नही बचती और ऐसा ज्वालामुखी फूटता है जो खुद अपनी विनाशकारी शक्ति से अपरिचित होता है। समाज, मर्यादाएं, कायदें कानून कुछ भी उस वेग को रोक नही पाते।2 ऐसे आतंकवाद को कुछेक कारणों से सम्बद्ध कर देना नादानी है तथापि आतंकवाद एक मानसिक अवसाद है जिसके पीछे अनेक मनोवैज्ञानिक कारण कार्य करते है जैसे–

1. किसी क्षेत्र, भाषा, धर्म विशेष की अनदेखी के कारण असंतोष का जन्म एवं नए राष्ट्र की कल्पना।
2. कट्टरवाद
3. नायक कहलवाने या प्रचार की आकांक्षा
4. भाषा, धर्म एवं जाति के आधार पर जनसंख्या असंतुलन
5. अपराधिक प्रवृत्ति
6. भावनात्मक पृथकता

7. जनमत की अनदेखी
8. अफवाहें
9. विजय की भावना, ऐतिहासिक प्रेरणाएं
10. हिंसा को सही और अंतिम रास्ता मानना
11. धर्म के नाम पर हिंसा को पवित्र कृत्य मानना
12. डर का मनोविज्ञान3

हमारे आज के परिवेश में ऐसे लोग कम नही है जो दूसरों का अपमान करना, मजाक बनाना, अभद्रता, निंदा, परदोष दर्शन, उग्रता, षडयंत्र निर्माण, भेदभाव, चरित्र हनन में संलग्न रहते है बस आतंकवाद इसी पिशाचवृत्ति का वीभत्स रूप है दूसरों को कष्ट में डालने की आकांक्षा आतंकी में इतनी प्रबल होती है कि वह अपने जीवन का भी मोल नही समझता। आतंकी कभी अपने कृत्यों को गलत नही समझता वह जो भी करता है उसकी अच्छाई के बारे में पूर्ण आश्वस्त रहता है या यह कहे कि आतंकी के मन में विधर्मी को मारकर पुण्य कमाने, धर्मयुद्ध का हिस्सा बनने जैसी धार्मिक धारणाएं होती है उसमें वैचारिक कट्टरता की प्रबलता होती है वह अपने को चारों ओर से भ्रम से घेरे रखता है। ''कुछ व्यक्ति तो इस आतंक की लडाई में बिना किसी तर्क के ही जुड जाते है। उनसे पूछा जाएं कि ऐसा क्यों कर रहे है या उनके उद्देश्य क्या है तो कोई बुद्धिपूर्ण उत्तर न होकर तोते की तरह आतंकी नेताओं के रटाएं हुए बोल दुहरा देते है।4'' सामान्य व्यक्ति के अंदर भी आंतकियों के द्वारा ऐसा जहर घोल दिया जाता है कि वो घृणा, द्वेष, बदले की भावना, शीघ्र परिणामों के लिए उतावलापन, मानवीय संवेदनाओं की कमी वाली मानसिकता से ओत–प्रोत हो जाते है। आतंकवाद एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक युद्ध भी है क्योंकि इसमें विपरीत पक्ष को मनोवैज्ञानिक ढंग से ही कमजोर किया जाता है। डराना, धमकाना, दुष्प्रचार अफवाहों के माध्यम से विपरीत पक्ष मे अविश्वास उत्पन्न किया जाता है।

भारत में आतंकवाद

आतंकवाद एक विश्वव्यापी ज्वलंत समस्या है जिसकी जडे विश्व के अधिकांश देशों में फैल चुकी है भारत तो आतंकवाद का विश दशकों से पी रहा है। इसके पडौसी राष्ट्र इसके जन्म के समय से अर्थात स्वतंत्रता के बाद से ही इसके लिए कांटे बोते आएं है। पाकिस्तान के इरादें तो भारत के प्रति हमेशा नापाक रहे है वह कश्मीर की आजादी के नाम पर आतंकवाद के जरिए भारत को निरंतर आहत करता रहा है। एशियाई महाद्वीप में अपना वर्चस्व स्थापित करने में संलग्न चीन तो पाकिस्तान को निरंतर भारत के खिलाफ इस्तेमाल करता रहा है और अरूणाचल प्रदेश को अपना हिस्सा बनाने पर तुला है। दूसरी और नेपाल और बांग्लादेश की सीमाओं से भी निरंतर घुसपैठ जारी है इतना ही नही उल्फा और बोडों आतंकियों का खतरा निरंतर मंडराता रहता है। इधर दक्षिण में लिट्टे संगठन की गतिविधियां समस्याएं पैदा करती हैं। चारों और प्रतिकूलता का वातावरण है और इन आतंकियों की क्रूर दृष्टि का ग्रास आम जनता बनती है।

समाधान की राहें

आतंक के विग्रह और विप्लव रूपी भंवर से निकलने के लिए आज समन्वय एवं सामंजस्य के सेतू की महती आवश्यकता है। आंतक के इस दानव पर यदि विजय प्राप्त करनी है तो धर्म के सही मायने

समझने होंगे। जो धर्म मानवता पर कुठाराघात करे, उसे धर्म नहीं कह सकते। धर्म कट्टरता का नाम नहीं श्रेष्ठताओं का समुच्चय है। धर्म अविवेक का अनुशरण नही सभ्यता का आधार है। धर्म के सही मायने समझने के लिए शिक्षा श्रेष्ठ जरिया बन सकती है।

प्रगतिशील शिक्षा आतंक के सफाए में सफल माध्यम सिद्ध हो सकती है। आतंक के विरूद्ध लडाई में शिक्षा को एक शस्त्र के समान इस्तेमाल करने से पूर्व शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन करने होंगे ताकि विद्यार्थियों का सम्पूर्ण नैतिक व मानसिक उत्थान हो सके। नैतिक और मानसिक विकास होने पर ही वे सही एवं गलत के बीच का अंतर समझने में सक्षम हो सकेंगे। शिक्षा एक ऐसी ज्योति होती है जिसके प्रकाश में अच्छे, बुरे, मानवता और दानवता दोनों का भेद उजागर हो जाता है।

इसके अलावा समाज से भेदभाव और अन्याय जैसी अवधारणाओं का भी समूल नाश किया जाना चाहिए। संसाधनों एवं सुविधाओं का न्यायपूर्ण एवं समान वितरण होना चाहिए। प्रशासन एवं सरकार दोनों का दायित्व है कि इस प्रकार की व्यवस्था की जाए कि जाति, वर्ग धर्म आदि के आधार पर कभी किसी को अन्याय या अपमान ना सहना पड़े, स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व की भावना के विकास से आतंकवाद का अंत किया जा सकता है।

लेकिन वास्तविकता तो यह है कि भारत को असली खतरा अपनी लकवे की बीमारी अर्थात अकर्मण्यता से है। भारत कभी भी आतंकवाद के खिलाफ सक्रिय एकजुट योजना क्रियान्वित नहीं कर पाया। सुरक्षा में चूक हो जाने पर या कोई विषम परिस्थिति उत्पन्न हो जाने पर हमारे यहां तुरंत कमेटी गठित कर दी जाती है। जांच कराई जाती है। लेकिन कमेटियों की रिपोर्ट आने पर उन पर गोपनीय का ठप्पा लगाकर उन्हें बक्सों में बंद कर दिया जाता है कोई भी कार्यवाही या आवश्यक कदम नही उठाये जाते। कानून बनाए जाते हैं लेकिन उन पर अमल नहीं किया जाता है और यदि कोई कानून इन आतंकियों से सखती से निपटे तो उस पर अनुपयोगी या अनावश्यक का ठप्पा लगा दिया जाता है।5

हर आतंकवादी हमले के बाद हमारे राजकीय नेतागण आतंक के खिलाफ एकजुट होने के लिए आह्वाहन करते हैं। उच्च स्तर पर बैठकें आहूत की जाती हैं। सभी वरिष्ठ नेताओं, सचिवों, सेना दल अध्यक्षों, सी0 आई0 बी0, रा0, के अफसरों से विचार विमर्श किए जाते हैं। घायल और मृतकों के नाम मुआवजे घोषित किए जाते हैं बस इसके बाद कोई कदम नही उठाएं जाते। सब कुछ कागजों में ही लिखा रह जाता है। आतंकवाद के खिलाफ कोई ठोस नीति नही बन पाती, अगला हमले होने तक सभी लोग सभी दुख और डर भूलकर पुनः रोजी रोटी कमाने में जुट जाते हैं। अपनी जिन्दगी की सुरक्षा का काम भगवान को सौप देते हैं।

निष्कर्ष–

लेकिन सिर्फ हुक्मरानों की निंदा करने से या सडक पर मोमबत्तियां जलाने से इस समस्या का हल नही हो सकता। एक आदर्श नागरिक को चाहिए कि आपसी मतभेदों को भुलाकर अपने समाज को एवं लोकतंत्र को मजबूत बनाए।6 हम हमेशा अधिकारों की मांग करते आए है अब कर्तव्यों की राह पर आगे बढना होगा। हमारे राजकीय नेता हमारी ही देन हैं। इसी लोकतंत्र का हिस्सा है। इस लोकतंत्र को मजबूत हम सभी को बनाना है। लोकतंत्र का ढांचा मजबूत हो, मानवीय अधिकारों का सम्मान हो, सर्व धर्म सम्भाव

और सभी मूल्यों का संरक्षण जरूरी है। आवश्यकता है कि हम राष्ट्रीय मुद्दों एवं सुरक्षा के मुद्दों को गम्भीरता से लेना शुरू करें। एक बार फिर से हम राष्ट्रवाद को अपना धर्म बना ले।7

पुलिस प्रशासन में राजनीति और भ्रष्टाचार को रोकना पडेगा। पुलिस सेवा को आवश्यक सुविधाएं मुहैया करानी पडेगी। एक सामान्य नागरिक को जब पुलिस का साथ मिल जाता है तो आतंकवाद को रोकना आसान हो जायेगा। राष्ट्र को अगर सशक्त बनाना है तो राजनीति से भ्रष्टाचार को खत्म करना पडेगा क्योंकि यह भ्रष्टाचार ही आतंकियों को प्रश्रय दिलाता है।

इसके अतिरिक्त सामाजिक समस्याएं जैसे गरीबी बेरोजगारी को दूर करने के लिए प्रभावी योजनाएं बनानी पडेगी क्योंकि गरीबी और बेरोजगारी का फायदा ही पेशेवर आतंकवादी उठाते हैं। आतंकवाद के खिलाफ मुहिम मुश्किल है पर नामुमकिन नहीं। हमें पाकिस्तान के खिलाफ उंगली उठाकर हाथ बांधकर नही बैठ जाना है बल्कि विश्व जनमत को इस आतंक की लड़ाई के विरोध में साथ लाना है। विश्व मंच से पाकिस्तान पर कूटनीतिक दबाव बनाना है। भारत को चाहिए कि जो आतंकवादी पकडे जाते हैं उन पर न्यायिक जांच प्रक्रिया शीघ्रता से चलाई जाए। एक नियमबद्ध प्रणाली और दूरदर्शी भूमिका अपनाने से भारत आतंकवाद को जड़ से खत्म करने में कामयाब हो सकता है और आतंकवाद पर काबू पा सकता है। आतंकियों के खिलाफ हमें खुद एक मानसिक युद्ध छेड़ना होगा और आतंकी देश के नवयुवकों को जिस तरह से बरगलाते हैं उस प्रक्रिया को रोकना होगा। आतंकियों की कारगुजारियों को अपने मजबूत इरादों से निष्फल करना होगा। यदि ये कदम नहीं उठाए गए तो आतंकवाद एक ऐसा प्रचंड ज्वालामुखी है जो अपने लावे में मानव सभ्यता को बहाकर ले जायेगा।

सन्दर्भ

1. मनोहर लाल बाथम, शिवचरण विश्वकर्मा–आतंकवाद, चुनौती और संघर्ष **पृ0–42**
2. डा0 श्वेता जैन–आतंकवाद के परिप्रेक्ष्य में भारत पाक सम्बन्धों का व्यवहारवादी अध्ययन **(1971–2007) पृ0–326**
3. तत्रैव–**332**
4. मनोहर लाल बाथम, शिवचरण विश्वकर्मा–आतंकवाद, चुनौती और संघर्ष **पृ0–49**
5. डा0 श्वेता जैन–आतंकवाद के परिप्रेक्ष्य में भारत पाक सम्बन्धों का व्यवहारवादी अध्ययन **(1971–2007) पृ0–349–350**
6. डा0 श्वेता जैन–आतंकवाद के परिप्रेक्ष्य में भारत पाक सम्बन्धों का व्यवहारवादी अध्ययन **(1971–2007) पृ0–414**
7. अरूण शौरी– पाकिस्तान बांग्लादेश आतंकवाद के पोषक **पृष्ठ–171**